Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

शासकीय एवं अशासकीय प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Ullhas Dadhakar[1]* Dr. Rakesh Kumar David[2] Manoj Kumar Sahu[3]

[1] Academic Counselor

[3] Assistant Professor

सार – भारतीय संविधान की प्रस्तावना मे भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक, धर्म निरपेक्ष, समाजवादी गणराज्य बनाने के लिये उसके समस्त नागरिको को न्याय, स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व प्रदान किये जाने का उल्लेख है। यही हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य है, यही हमारे राष्ट्र के मूल्य व उद्देश्य है।

इन राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा को एक सशक्त माध्यम माना गया है और यह सही भी है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र ने अपनी अद्वितीय सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के लिये अपनी अलग राष्ट्रीय प्रणाली का विकास किया है। भारत में इस दिशा मे प्रयास 1948 से प्रारम्भ हुए थे जबकि डॉ. राधकृष्णन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया और सन् 1952 में श्री मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग गठित हुआ, इन आयोगों की रिर्पोट आयी, क्रियान्वित भी हुई किन्तु शिक्षा के समग्र रूप पर विचार डी. कोठारी की अध्यक्षता वाले शिक्षा आयोग (1964-66) ने किया, जिसके आधर पर जुलाई 1968 में सर्वप्रथम स्वतन्त्र भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई।

---------------------------------x---------------------------------

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार शिक्षा को एक ओर जहाँ राष्ट्र की संस्कृति का संरक्षण करना है, वही संविधान के संकल्पों को पूरा करने में समर्थ नई पीढ़ी को तैयार करना है। शिक्षा की प्रमुख भूमिका है- जनशक्ति का निर्माण। ऐसी जनशक्ति जो विभिन्न दायित्वों को संभालने में समर्थ हो, देश की संस्कृति का सम्बर्द्धन करें, राष्ट्रीय चरित्र से परिपूर्ण हो तथा प्रतियोगिता के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आत्म विश्वास के साथ खड़ी हो सकें।

इन बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए छात्र-छात्रा अध्यापकों के व्यक्तित्व के सन्तुलित विकास के लिए जहां विषय ज्ञान, कौशल, अभिवृत्तियाँ एवं मूल्यों का विकास अपेक्षित होगा, वहीं मूल्यों के प्रति निष्ठा जगाने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान होता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 में कहा गया है कि ‘समाज में अनिवार्य मूल्यों में निरन्तर कमी तथा बढ़ते हुए सनकीपन के कारण पाठ्यक्रम में तथा शिक्षा व्यवस्था में समयानुसार परिवर्तन आवश्यक हो गया है, ताकि शिक्षा द्वारा सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों को विकसित किया जा सके।

मनोविज्ञान के आधुनिक सिद्धान्त बताते है कि बालक के विकास में वातावरण का प्रभाव सर्वप्रमुख होता है। प्रसिद्ध व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक वाटसन ने तो यहां तक कह डाला कि ‘‘तुम मुझे कोई भी बच्चा दे दो जो कहोगे उसे वही बना दूगां।’’ वाटसन की उपर्यु क्त उक्ति में वातावरण का बालक पर कितना अधिक प्रभाव पड़ता है, स्पष्टतः परिलक्षित होता है। य़द्यपि आज शिक्षा की समान संरचना के लिए राष्ट्रीय प्रयास जारी है तथा 10+2+3 की शैक्षिक संरचना को लगभग पूरे देश में स्वीकार किया गया है। इसके अतिरिक्त, समान पाठ्यक्रम तथा शैक्षिक अवसरों की समानता प्रदान करने के प्रयास भी जारी है। लेकिन इन सब प्रकार की समानताओं के बावजूद शैक्षिक भिन्नता मौजूद है। विशेषकर स्ववित्तपोषित एवं अनुदानित प्रशिक्षण महाविद्यालयों के मूल्यों, में भी अन्तर पैदा करता है। बालक को जो वातावरण उपलब्ध होता है, उसका प्रभाव उसके मूल्य पर पड़ता है।

इस शोध के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा सकती है, कि वह कैसा वातावरण है, जिसमें रहकर बालक का सम्पूर्ण विकास हो सकता है। इसके द्वारा यह ज्ञान भी प्राप्त हो सकता

www.ignited.in

है कि शासकीय एवं अशासकीय प्रशिक्षण महाविद्यालयों वातावरण में वे कौन-कौन से पक्ष है, जो इन दानों में अन्तर पैदा करते है। माध्यमिक स्तर पर अध्यापनरत् शिक्षकों के लिए भी यह शोध अति उपादेय सिद्ध होगा, क्योंकि सभी वर्तमान विद्यालय, छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मण्डल रायपुर (छ.ग.) एवं समाज, अध्यापक से के वल यह आशा करते है कि बालक को ना केवल सूचनात्मक ज्ञान दें, बल्कि उसका यह भी दायित्व होता है ।

सम्बन्ध्ति साहित्य का अध्ययनः-

हसीन (1998) ने सामाजिक वर्ग तथा आधुनिकता के सन्दर्भ में हिन्दू तथा आहिन्दू छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में सभी तीन प्रकार-राजकीय, वित्त पोषित मान्यतायें प्राप्त व वित्त विहीन मान्यता प्राप्त विद्यालयों के 400 छात्रों का सामान्य स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा चयन किया गया। उपकरण के रूप में राघवेन्द्र, एस0 सिंह, अमरनाथ एवं त्रिपाठी, राजीबाद का आधुनिकीकरण मापनी, गिलानी का मूल्य परीक्षण एवं कुप्पूस्वामी का सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी प्रयोग किये गये। शोध के प्रमुख निष्कर्ष थे-

1. व्यक्तिगत मूल्यों के सम्बन्ध में हिन्दू तथा मुसलमान बालकों में मतभेद थे किन्तु हिन्दू व मुसलमान बालिकाओं या मुसलमान बालकों, बालिकाओं से किसी प्रकार मतभेद नहीं था।
2. जब उच्च तथा निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों की तथा छोटे व बड़े परिवारों वाले छात्रों के व्यक्तिगत मूल्यों की तुलना की गयी तो यह पाया गया कि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा बड़े परिवारों के छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य अन्य तु लना में उच्च थे।
3. निम्न आधुनिक छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य अन्य की तुलना में उच्च पाये गये।
4. सामाजिक वर्ग व आधुनिकीकरण के मध्य सार्थक ऋणात्मक सम्बन्ध पाया गया।
5. ईसाई तथा मुसलमान छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य आधुनिकता से प्रभावित थे किन्तु हिन्दू छात्रों में ऐसा नहीं था।
6. विभिन्न धर्मिक पृष्ठभूमि वाले छात्रों के व्यक्तिगत मूल्य भिन्न थे।

मार्गन, डब्ल्यू एवं स्टैन, एम0 (2001) ने अपने अध्ययन में पाया कि समाज में सेवा के द्वारा छात्रों में नैतिक मूल्य का निर्माण किया जा सकता है।

अस्थाना एवं श्रीवास्तव (2002) ने हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के मध्य मूल्य एवं आत्मप्रत्यय पर सार्थक अन्तर पाया।

श्रीवास्तव (2004) ने एक समान सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के हिन्दी एवं अंग्रे जी माध्यम में पढने वाले छात्रों के मध्य विभिन्न मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध के उद्देश्यः-

प्रस्तुत शोध के लिए निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है-

1. शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों का शोध करना।
2. शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों की तुलना करना।

शोध की परिकल्पनायें:-

प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्धारण किया गया है।

1. शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्यों में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अनुसन्धन की विधिः-

प्रस्तुत शोध में अनुसन्धानकर्ता ने उद्देश्य और साधनों की प्रकृति को दृष्टिगत रखते हुये अनुसन्धान के वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि (नॉमेर्टिव सर्वे मैथड आफॅ रिसर्च) का प्रयोग किया है।

जनसंख्याः-

प्रस्तुत शोध में बिलासपुर विश्वविद्यालय, बिलासपुर से सम्बद्ध केवल स्नातक एंव स्नातकोत्तर शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्र/छात्रा अध्यापकों के रूप में लिया गया है।

न्यादर्शः-

प्रक्षेत्र के केवल दो जिलें बिलासपु र व कोरबा के शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालयों की सूची बनाकर उसमें से लाटरी विधि द्वारा

शासकीय एवं अशासकीय शिक्षा प्रशिक्षण महाविद्यालय को चुना गया है। तदोपरान्त इन महाविद्यालयों में से एक निश्चित अनुपात में बी.एड. के छात्र एवं छात्रा अध्यापकों को यादृच्छिकी प्रतिचयन विधि द्वारा चुना गया है। प्रस्तुत शोध हेतु यादृच्छिकी न्यादर्श की लाटरी विधि का चयन न्यादर्श चयन हेतु किया है। शोध में प्रयुक्त चरः- स्वतन्त्र चरः शासकीय एवं अशासकीय, आश्रित चरः मूल्य, व्यक्तित्व मूल्य प्रश्नावली- प्रयुक्त शोध में शैरी एवं वर्मा द्वारा निर्मित भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल व्यक्तिगत प्रश्नावली का परीक्षण प्रयोग किया गया। इस परीक्षण के द्वारा निम्नलिखित दस मूल्यों का मापन किया जाता है। 1. धर्मिक मूल्य 2. सामाजिक मूल्य 3. प्रजातांत्रिक मूल्य 4. सौन्दर्यात्मक मूल्य 5. अर्थमूल्य 6. ज्ञानमूल्य 7. सुखमूल्य 8. पावरमूल्य 9. पारिवारिक प्रतिष्ठामूल्य 10. स्वास्थ्यमूल्य

सांख्यिकीय विधियाँ:

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग किया गया है।

1- मध्यमान

2- मानक विचलन एवं

3- टी-परीक्षण।

शोध-परिणाम एवं निष्कर्ष:-

.01 स्तर पर सार्थक अन्तर हैः .05 स्तर पर सार्थक अन्तर है

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य धार्मिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों ही स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नही है। इसका अर्थ यह है कि शासकीय एवं अशासकीय विद्यार्थियों में धर्मिक मूल्य का विकास एक समान रूप से हुआ है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य सामाजिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। सामाजिक मूल्य एक समान रूप से विकसित नही है। शासकीय विद्यार्थियों की अपेक्षा अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में सामाजिक मूल्य अधिक विकसित हुए है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य प्रजातांत्रिक मूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। प्रजातांत्रिक मूल्य समान रूप से विकसित नही है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों की अपेक्षा शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में प्रजातांत्रिक मूल्य अधिक विकसित है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य सौन्दर्यात्मक मूल्य पर सार्थकता के दो नों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। सौन्दर्यात्मक मूल्य समान रूप से विकसित नही है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों की अपेक्षा शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक विकसित है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मूल्य अर्थमूल्य पर सार्थकता केदोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। अर्थमूल्य समान रूप से विकसित नही है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में अर्थमूल्य अधिक विकसित है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य ज्ञानमूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। ज्ञानमूल्य समान रूप से विकसित नही है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में ज्ञानमूल्य अधिक विकसित है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य सुखमूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर नही है। सुखमूल्य समान रूप से विकसित है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य पावरमूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। पावरमूल्य समान रूप से विकसित नही है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों की अपेक्षा शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में पावरमूल्य अधिक विकसित हुए है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य पारिवारिक प्रतिष्ठामूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। पारिवारिक प्रतिष्ठामूल्य समान रूप से विकसित नही है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों की अपेक्षा शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में पारिवारिक प्रतिष्ठामूल्य अधिक विकसित हुए है।

शासकीय एवं अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों के मध्य स्वास्थ्यमूल्य पर सार्थकता के दोनों स्तर .05 एवं .01 पर सार्थक अन्तर है। स्वास्थ्यमूल्य समान रूप से विकसित नही

www.ignited.in

है। अशासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों की अपेक्षा शासकीय छात्र/छात्रा अध्यापकों में स्वास्थ्यमूल्य अधिक विकसित हुए है।

शैक्षिक अनुप्रयोगः-

असमानता इस संसार का सत्य है, वर्तमान में भारत ही क्या समस्त विश्व के शिक्षाविद, समाज सुधारक जोर-जोर से आवाज उठाकर असामनता का विरोध और समानता की बात कर रहें है, क्योंकि सबको समान सुविधायें उपलब्ध न होने के कारण शिक्षा की गुणवत्ता तथा बालकों का व्यक्तित्व प्रभावित हो रहा है। अतः प्रस्तुत शोध के निष्कर्षो को प्रस्तुत करने से शोधार्थी का तात्पर्य यह है कि यदि हमें "सबके लिए शिक्षा व ऊँच-नीच" के भेदभाव को मिटाने का संकल्प पूर्ण करना चाहते है, तो सरकार को सभी क्षेत्रों में समान सुविधायें उपलब्ध करानी होगी। जिससे की इन सुविधाओं का लाभ उठाकर प्रत्येक क्षेत्रों से सम्बन्धित विद्यार्थी अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सके, एंव समान रूप से उन्नत कर अपने परिवार, समाज व राष्ट्र को गौरवान्वित कर सकें।

सन्दर्भः-

1. अग्रवाल, वी वैल्यू सिस्टम एण्ड डायमेन्शन्स ऑफ़ यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स डाक्टोरल थीसिस, लखनऊ यूनिवर्सिटी, 1959

2. एम.बी. बुच द्वारा संपादित, सर्वे ऑफ़ रिसर्च इन एजूकेशन, सेन्टर ऑफ़ एडवांस्ड स्टडी इन एजू केशन बड़ोदा, 1974, 99।

3. कपिल, एच.के.: "अनुसान्धन विधियाँ" हर प्रसाद भार्गव, 41230 कचहरी घाट आगरा-4, 1984, पेज 194।

4. गिल्फोर्ड, जे.पी.: फण्डामेन्टल स्टेटिस्टिक इन साइक्लोजी एण्ड एजू केशन, मेग्राहिल, 1950।

5. गैरिट, एच.ई.: स्टेटिस्टिक इन साइक्लोजीकल ऐव्ल्यूऐशन, बम्बई, बे फक्सि फेयर्स एण्ड सोमेन्स प्राईवेट लिमिटेड, पेज 363।

6. डोरथी, टी.एस.: द वैल्यूज द पोस्ट वार कालेज स्टूडेन्ट्स द जर्नल आफ सोशनल साइकोलाजी 1952, 35, 217-25।

Corresponding Author

Dr. Ullhas Dadhakar*

Academic Counselor

www.ignited.in